

बाल-आश्रम में निवासित बालकों की विलग-भावना एवम् शैक्षिक आकांक्षाएँ

Alienation and Educational Aspirations of Children Residing in Bal-Aashram

Paper Submission: 00/00/2021, Date of Acceptance: 00/00/2021, Date of Publication: 00/00/2021

सपना वर्मा

सहायक आचार्या,

वनस्थली विद्यापीठ,

जयपुर, राजस्थान, भारत

अर्चना यादव

शोधार्थी,

शिक्षा संकाय,

वनस्थली विद्यापीठ,

जयपुर, राजस्थान, भारत

सारांश

परिवार समाज की एक लघु इकाई है। भारतीय समाज में परिवार को सबसे महत्वपूर्ण माना गया है। परिवार बालकों के उचित विकास, लोकाचार सीखने व स्वस्थ व्यक्तित्व निर्माण में सहयोग करते हैं। इसीलिए प्रायः कहा जाता है कि बालक का पालन-पोषण जिस प्रकार का होगा एवं उसे जैसे संस्कार प्राप्त होंगे, राष्ट्र एवं समाज को बालक से उसी के अनुरूप प्रतिफल मिलेंगे। किन्तु कुछ बालक ऐसे भी हैं, जो निराश्रित हैं एवम् जिनके पास कोई घर या परिवार नहीं है। जनगणना 2011 के अनुसार, “6 से 14 वर्ष के 18.33 करोड़ बालकों में से 0.8 प्रतिशत से अधिक बालक निराश्रित की श्रेणी में आते हैं।” इतनी अधिक संख्या में मौजूद निराश्रित बालकों की ओर अगर ध्यान नहीं दिया गया तो देश की प्रगति में बाधा उत्पन्न होगी। समाज में इन निराश्रित बालकों में से बहुत से बाल श्रमिक अथवा बाल-अपराधी बन जाते हैं, किन्तु कुछ भाग्यशाली बालक ऐसे हैं, जिनके पालन-पोषण की जिम्मेदारी किसी बाल-आश्रम द्वारा ले ली जाती है। यद्यपि भारत में संवैधानिक तौर पर सभी बालकों को समान अधिकार दिए गए हैं तथापि समाज में यह वर्ग ऐसा है, जो सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक वंचितता से जूझ रहा है। देश में हजारों बालक ऐसे हैं, जो अनेक कारणों से गृहविहीन होकर बाल-आश्रम में निवास कर रहे हैं। ऐसे बालक माता-पिता का स्नेह प्राप्त नहीं कर पाते तथा स्वयं को विलग, परित्यक्त एवं असहाय महसूस करते हैं। बाल-आश्रमों में निवासित बालकों में पारिवारिक संबंधों के अभाव के कारण उनमें प्रेम, स्नेह, सहानुभूति आदि मनोभावों का भली-भांति संचार नहीं हो पाता है। ये बालक सामाजिक सम्बन्धों में सामान्यतः निष्क्रिय ही होते हैं। जिससे इनमें अकेलेपन की या विलग भावना की उत्पत्ति हो जाती है। ये बालक सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक दोनों ही पक्षों से विलग रह जाते हैं। अलगाव के कारण उनकी शैक्षिक आकांक्षा का स्तर भी प्रभावित होता है। शैक्षिक आकांक्षा शैक्षणिक उपलब्धि की भविष्यवाणी करने में एक महत्वपूर्ण चर है। बाल-आश्रम में निवासित बालकों को वे समस्त भौतिक वस्तुएँ उपलब्ध नहीं हो पाती जिनकी उन्हें आवश्यकता महसूस होती है, ऐसे में वे अपनी इच्छाओं का उस वक्त दमन करने लगते हैं किन्तु भविष्य के लिए उनकी शैक्षिक आकांक्षाएँ बलवती होने लगती हैं और वे पढ़-लिखकर विशिष्ट पद पर पहुँचकर भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति की आकांक्षा करने लगते हैं। प्रस्तुत शोध पत्र इस आशा के साथ लिखा गया है कि निराश्रित बालकों के बारे में यह पता लगाया जा सके कि उनकी विलग-भावना का शैक्षिक आकांक्षा से कोई सम्बन्ध है अथवा नहीं। इसी विचार से सम्बन्धित विषय को एक केन्द्रीय प्रसंग बनाते हुए, इस विषय की गंभीरता या महत्ता को समझने में शोधार्थी का प्रयास मददगार होगा।

Family is a small unit of society. Family is considered the most important in Indian society. The family helps in the proper development of the child, learning ethos and building a healthy personality. That is why it is often said that the kind of upbringing of the child and the kind of rites he will get, the nation and society will get the corresponding rewards from the child. But there are some children who are destitute and who do not have any home or family. According to Census 2011, "more than 0.8 percent of the 18.33 crore children in the age group of 6 to 14 years fall into the category of destitute." If such a large number of destitute children are not given attention, then the progress of the country will be hampered. There are thousands of children in the country who are homeless due to various reasons and are living in children's ashrams. Such children are unable to get the affection of their parents and feel isolated, abandoned and helpless. Due to lack of family ties among the children residing in the children's ashrams, the feelings of love, affection, sympathy etc. These children are generally passive in social relationships. Due to which a feeling of loneliness arises in them. These children remain isolated from both social and psychological aspects. Their level of educational aspiration is also affected due to isolation. Educational aspiration is an important variable in predicting academic achievement. Children residing in children's homes do not get all the material things that they feel they need, so they start suppressing their desires at that time but in future. For this, their educational aspirations start getting stronger and they start aspiring to fulfill their material needs after reaching a specific position by reading and writing. The present research paper has been written with the hope that it can be found out about destitute children whether their sense of isolation has any relation with educational aspiration or not. By making the topic related to this idea a central theme, the researcher's effort will be helpful in understanding the seriousness or importance of this topic.

मुख्य शब्द : बाल-आश्रम, विलग-भावना, निराश्रित बालक, समाज, शैक्षिक आकांक्षा।

Children's Home, Isolation-Feeling,
Dependent Child, Society,
Educational Aspiration.

प्रस्तावना

भारत एक विकासशील एवं लोकतांत्रिक देश है और किसी भी देश का विकास उसकी शिक्षा प्रणाली द्वारा ही अनुप्रमाणित होता है। शिक्षा ही वह दर्पण है जिसमें किसी राष्ट्र की अस्मिता प्रत्यक्ष रूप से प्रतिबिम्बित होती है। शिक्षा न सिर्फ व्यक्ति विशेष के विकास का साधन है, बल्कि यह किसी भी राष्ट्र के सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक उत्थान का सबसे शक्तिशाली माध्यम भी है। किसी भी राष्ट्र का विकास तब तक पूर्ण नहीं हो सकता जब तक उसका प्रत्येक नागरिक शिक्षित न हो जाए। देशके प्रत्येक बालक एवं बालिका को शिक्षा प्रदान करना राज्य का कर्तव्य है। इस प्रकार भारत में प्रत्येक बालक चाहे वह किसी भी धर्म, जाति, लिंग का हो अथवा निर्बल, निःशक्त, अनाथ हो उसकी शिक्षा का प्रावधान सरकार व अन्य संगठनों द्वारा किया जा रहा है।

पारिवारिक पृष्ठभूमि

भारतीय समाज में परिवार को सबसे महत्वपूर्ण माना गया है। बालक जन्म लेने के बाद से ही स्वयं को विभिन्न परिस्थितियों में घिरा पाता है। यही वातावरणीय परिस्थितियाँ उसके विकास को प्रभावित करती हैं। बालक का प्रथम वातावरण उसका परिवार होता है, जहाँ माता-पिता के स्नेह व दुलार के साथ उसकी आवश्यकताएँ पूरी होती हैं, साथ ही परिवार के अन्य सदस्यों से बालक के सम्पर्क द्वारा बालक का सामाजिकरण प्रारम्भ होता है, जो जीवन पर्यन्त चलता है। परिवार में बालक के माता-पिता व अन्य सदस्य ऐसा वातावरण निर्मित करते हैं, जिससे बालक का जीवन प्रभावित होता है। माता-पिता न केवल बालक की भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं वरन् अपने स्नेह, सुरक्षा, अपनत्व, वात्सल्य से एक स्नेह बंध बनाकर सामाजिक व मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं की पूर्ति भी करते हैं। कुछ बालक ऐसे भी हैं, जो निराश्रित हैं व जिनके पास कोई घर या परिवार नहीं है। समाज में इन निराश्रित बालकों में से बहुत से बाल श्रमिक अथवा बाल-अपराधी बन जाते हैं, किन्तु कुछ भाग्यशाली बालक ऐसे हैं, जिनके पालन-पोषण की जिम्मेदारी किसी बाल-आश्रम द्वारा ले ली जाती है।

शोध पत्र के उद्देश्य

1. बाल-आश्रम में निवासित बालकों में विलग भावना किस प्रकार की पाई जाती है?
2. बाल-आश्रम में निवासित बालकों की शैक्षिक आकांक्षाएँ क्या होती है?

बाल-आश्रम में रहने वाले बालक

इस देश में हजारों बालक ऐसे भी हैं, जो अभिभावकों की मृत्यु, अवैध जन्म, अभिभावकों को जेल होने, प्राकृतिक आपदाओं जैसे-भूकम्प, बाढ़ या आतंकवाद का शिकार होने के कारण परिवार से बिछुड़ जाने, गरीबी, बीमारी एवं तलाक के कारण बालक को त्याग देने, बालक का बाजार, मेले, रेलवे स्टेशन जैसे भीड़ भरे स्थानों में माता-पिता से बिछुड़ जाने, बालक के घर से भागकर आने आदि कारणों से गृहविहीन होकर बाल-आश्रम में निवास कर रहे हैं। विपरीत परिस्थितियाँ होने के कारण ये बालक समाज की मुख्य धारा से कटे होते हैं। ऐसे बालक माता-पिता का स्नेह प्राप्त नहीं कर पाते तथा स्वयं को विलग, परित्यक्त एवं असहाय महसूस करते हैं। बालक की गृहविहीन स्थितियाँ उसे असुरक्षित, कुण्ठाग्रस्त और विलग-भाव से ग्रसित बना देती हैं।

विलग-भावना

विलग-भावना से अभिप्राय एकाकीपन अथवा पृथक्करण की भावना से है। बालक में स्थाई सांवेगिक अनुभवों एवं पारिवारिक लगाव की कमी से उत्पन्न हुए अकेलेपन का एहसास। संवेगात्मक रूप से अस्थिर एवं कुसमायोजित रहना भी अकेलेपन को प्रदर्शित करता है।

बालक के पालन-पोषण के तरीके एवं पारिवारिक पृष्ठभूमि का बालक के व्यवहार से सार्थक संबंध होता है। स्नेह एवं सहानुभूति एक प्रकार की कोमल भावना है, जिसकी नींव परिवार में पड़ती है, किन्तु बाल-आश्रमों में निवासित बालकों में पारिवारिक संबंधों के अभाव के कारण उनमें प्रेम, स्नेह, सहानुभूति आदि मनोभावों का भली-भांति संचार नहीं हो पाता है। ये बालक सामाजिक सम्बन्धों में सामान्यतः निष्क्रिय ही होते हैं। जिससे इनमें अलगाव की उत्पत्ति हो जाती है। इन बालकों में अकेलेपन के कई मनोवैज्ञानिक कारण हो सकते हैं, जैसे-पारिवारिक लगाव की कमी होना, वर्तमान परिस्थितियों में सहानुभूति की कमी होना आदि। ये बालक सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक दोनों ही पक्षों से विलग रह जाते हैं।

बी. विलमैन के अनुसार, “जन्म से प्राप्त सभी आनुवंशिक गुणों को माता-पिता के दुलार में निखरने का अवसर प्राप्त होता है। परिवार के सदस्यों के साथ इसी अनुकरण के माध्यम से बालक सामाजिक संबंध निभाना सीखता है। माता-पिता के आपसी सम्बन्ध बालक के प्रति उनका दृष्टिकोण एवं सामाजिक नियंत्रण बालक के व्यवहार को एक दिशा देते हैं।”

मित्तल, आर. (2020) ने संस्थाओं में पलने वाले और संस्थाओं में नहीं पलने वाले बालकों की समस्याओं एवं विलग-भावना का अध्ययन किया। इस अध्ययन के निम्न परिणाम प्राप्त हुए - संस्था में पलने वाले बालक अधिक समस्याग्रस्त पाए गए। संस्था में रहने वाले बालक विलग-भाव से ग्रसित, सांवेगिक रूप से असंतुलित, गैर जिम्मेदार, उद्देश्यहीन, असुरक्षित, निम्न एवं कुंठित पाए गए।

खान, एम. एस. (2019) में जनजाति एवं अनाथ बालकों में समायोजन एवम् एकाकीपन की भावना का तुलनात्मक अध्ययन करते हुए निम्नलिखित निष्कर्ष निकाले- अनाथ बालकों को जनजाति बालकों की तुलना में समायोजन में ज्यादा समस्या तथा एकाकीपन की भावना अधिक रहती है। जनजाति बालकों का समायोजन अधिक अच्छा तथा एकाकीपन की भावना बहुत कम पाई गई।

इस प्रकार के अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि परिवार के बिना बालक में कुसमायोजन, एकाकीपन, तनाव एवं उत्साह हीनता उत्पन्न हो जाते हैं। परिवार बालकों के व्यक्तित्व गुणों को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है साथ ही उन्हें अपनी एक पहचान बनाने का अवसर भी प्रदान करता है। गृहविहीन बालक स्वयं को असुरक्षित एवं उपेक्षित महसूस करते हैं तथा स्वयं के प्रति नकारात्मक धारणा रखते हैं। परिवार के बिना बालक प्यार, स्नेह व लगाव से वंचित होता है तथा उसमें नकारात्मकता का विकास होने लगता है। नकारात्मक धारणा बालकों के आत्मविश्वास को कम करती है जिससे बालक एवं बालिकाओं की शैक्षिक आकांक्षा भी निर्धारित होती है, इससे एक ओर बालक की सफलताएँ प्रभावित होती हैं, वहीं असफलताओं के कारण उनकी शैक्षिक आकांक्षा का स्तर भी प्रभावित होने लगता है।

शैक्षिक आकांक्षा

शैक्षिक आकांक्षा से अभिप्राय आन्तरिक रूप से शिक्षा सम्बन्धी लक्ष्यों को प्राप्त करने की प्रबल इच्छा रखने से है। प्रत्येक बालक की यह अभिलाषा होती है कि वह शिक्षा प्राप्ति के पश्चात् किसी विशिष्ट पद को प्राप्त करे। बालक की यह चाह परिवार के सहयोग एवं संसाधनों की उपलब्धता के बिना पूर्ण होना कठिन है, इसी तरह की अभिलाषा प्रत्येक बालक अपने जीवन में रखता है, लेकिन बाल-आश्रम में निवासित बालकों को वे समस्त भौतिक वस्तुएँ उपलब्ध नहीं हो पाती जिनकी उन्हें आवश्यकता महसूस होती है, ऐसे में वे अपनी इच्छाओं का उस वक्त दमन करने लगते हैं किन्तु भविष्य के लिए उनकी शैक्षिक आकांक्षाएँ बलवती होने लगती हैं और वे पढ़-लिखकर विशिष्ट पद पर पहुँचकर भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति की आकांक्षा करने लगते हैं।

शैक्षिक आकांक्षा बालक के सम्पूर्ण जीवन को प्रभावित करती है। जब शिक्षा में निरन्तर सफलताएँ मिलती हैं, तो बालक की शैक्षिक आकांक्षा स्तर में वृद्धि होती है और जब उसे सन्तोषजनक सफलताएँ नहीं मिल पाती तो उसका शैक्षिक आकांक्षा स्तर विकृत होने लगता है। उसमें चिन्ता, कुण्ठा और कुसमायोजन उत्पन्न हो जाता है। बाल शैक्षिक आकांक्षा स्तर के प्रत्यय का अध्ययन सर्वप्रथम होप (1930) एवं डेम्बो (1931) ने किया था। इन्होंने व्यक्ति द्वारा पाने वाले लक्ष्य के कठिनता स्तर के सन्दर्भ में शैक्षिक आकांक्षा स्तर का वर्णन किया। इन्होंने लक्ष्य निर्धारित व्यवहार को प्रभावित करने वाले कारकों की खोज पर

काम किया और यह निष्कर्ष निकाला की कुछ बालक प्रारम्भ से ही शिक्षा में उच्च शैक्षिक आकांक्षा प्रदर्शित करते हैं, वहीं कुछ निम्न शैक्षिक आकांक्षा रखते हैं।

अली, एम. (2019) ने 14 से 18 वर्ष के कुल 138 (69 सामान्य व 69 निराश्रित) निराश्रित एवं सामान्य बालकों की व्यक्तित्व आवश्यकताओं, शैक्षिक आकांक्षा एवं सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन किया। इस अध्ययन के निम्न परिणाम प्राप्त हुए - सात आवश्यकताओं - नेतृत्व, आदेश, प्रदर्शन, सम्बद्धता, प्रभावित, परिवर्तन एवं आवेश में सामान्य एवं निराश्रित बालकों में सार्थक अन्तर है। अन्य आवश्यकताओं में दोनों समूहों के मध्य कोई अन्तर नहीं पाया गया। सामान्य एवं निराश्रित बालकों की सृजनात्मकता में भिन्नता है। दोनों समूहों के मध्य शैक्षिक आकांक्षा में भी भिन्नता पाई गई।

हंस व अन्य (2018) ने माता-पिता के दृष्टिकोण, सुरक्षा की भावना व परिवार की सामाजिक आर्थिक स्थिति का शैक्षिक आकांक्षा पर प्रभाव संबंधी अध्ययन किया। अध्ययन में उपरोक्त सभी कारकों का शैक्षिक आकांक्षा से धनात्मक सहसंबंध पाया।

शैक्षिक आकांक्षा से सम्बन्धित विभिन्न अध्ययनों से यह स्पष्ट हो जाता है कि शैक्षिक आकांक्षा शैक्षणिक उपलब्धि की भविष्यवाणी करने में एक महत्वपूर्ण चर है और इसे शैक्षणिक उपलब्धि के प्रेरक तत्व के रूप में देखा जा सकता है। यह उनके द्वारा सफलता की इच्छा विशेषतः शिक्षा के क्षेत्र में या विशेष डिग्री को हासिल करने पर केन्द्रित होता है।

निष्कर्ष

यूनिसेफ (2011) के आँकड़ों (दस वर्ष के औसत) के अनुसार, सम्पूर्ण विश्व में लगभग 14,30,00,000 बच्चे प्रतिवर्ष बाल-आश्रम पहुँचते हैं। जिसमें से लगभग 2,50,000 बच्चे प्रतिवर्ष बाल-आश्रमों से गोद ले लिये जाते हैं, शेष लगभग 1,40,50,000 बालक एवं बालिकाएँ प्रतिवर्ष बाल-आश्रम की आयु-सीमा पूर्ण करके ही बाल-आश्रम से बाहर निकलते हैं। प्रस्तुत आँकड़े स्पष्ट करते हैं कि विश्व में बहुत बड़ी संख्या में बालक एवं बालिकाएँ बाल-आश्रमों में निवास करते हैं। इन बाल-आश्रमों में बच्चों को माता-पिता का प्यार एवं सानिध्य प्राप्त नहीं होने के कारण उनमें अलगाव भावना एवं हीनभावना जैसी मनोवैज्ञानिक समस्याएँ उत्पन्न होने लगती हैं। अकेलापन जहाँ बालकों की सफलता व विफलता को निर्देशित करता है वहीं सफलता व विफलताएँ उनकी शैक्षिक आकांक्षाओं को भी प्रभावित करती हैं। शैक्षिक आकांक्षाएँ बालक के भविष्य को निर्धारित करती हैं। जब बालक विलग-भावना से ग्रसित हो तो शैक्षिक आकांक्षा अधिक बलवती रहती है। विभिन्न अध्ययनों एवम् स्रोतों से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है की बाल-आश्रम में निवासित बालकों की विलग भावना शैक्षिक आकांक्षा से सकारात्मक रूप से सम्बन्धित है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- अली, एम. (2019). निराश्रित एवं सामान्य बालकों की व्यक्तित्व आवश्यकताओं, शैक्षिक आकांक्षा एवं सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन, इंडियन जरनल ऑफ एपलाईड साइकोलॉजी, वॉल्यूम 42, नं. 5, जुलाई 2015, पृष्ठ संख्या 57-62
- ऐकन, एम. और हाग्रे (2018). व्यवसायिक अलगाव: एक तुलनात्मक विश्लेषण, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, एडिसन 5, अगस्त 2011, पृष्ठ संख्या 1-2
- कालिया, ए. के. (2012). वैल बिंग ऑफ अडोल सैन्ट्स इन रिलेशन टू जैन्डर एण्ड एकडेमिक अचिवमेंट, जरनल ऑफ एजुकेशनल एण्ड साइकोलॉजिकल रिसर्च, वॉल्यूम 5, नं.1, जनवरी 2012, पृष्ठ संख्या 56-62
- खान, एम. एस. (2019). जनजाति एवं अनाथ बालकों में समायोजन एवम् एकाकीपन की भावना का तुलनात्मक अध्ययन, जरनल ऑफ एजुकेशनल एण्ड साइकोलॉजिकल रिसर्च, वॉल्यूम-7, नं.1, जनवरी 2016, पृष्ठ संख्या 27-32
- मित्तल, आर. (2020). संस्थाओं में पलने वाले और संस्थाओं में नहीं पलने वाले बालकों की समस्याओं एवम् विलग-भावना का अध्ययन, जरनल ऑफ टीचर एसोसिएशन, वॉल्यूम 7, नं. 2, जून 2017, पृष्ठ संख्या 44-51
- खान, वाई.जी. (2009). लेवल ऑफ एजुकेशनल एसपिरेशन टैस्ट, एच. पी. भार्गव बुक हाऊस, आगरा, पृष्ठ संख्या 1
- गुप्ता, एम. (2000) शिक्षा संस्कार की उपलब्धि, क्लासिकल पब्लिशिंग कम्पनी, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या -1
- गुप्ता, जे. (2016). परिवार में पोषित एवं संस्था में निवासित अनाथ बालकों की दुष्चिन्ता, आत्मप्रत्यय एवं निर्भरता का अध्ययन, अमेरिकन सोसियोलॉजिकल रिव्यू, वॉल्यूम 24, नं. 5, दिसम्बर 2016, पृष्ठ संख्या 54-61
- चौधरी, वी. (2019). माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर एवं शैक्षिक उपलब्धि का सहसम्बन्धात्मक अध्ययन, इंडियन साइकोलॉजिकल रिव्यू, वॉल्यूम 75, स्पेशल इस्यु, 2017, पृष्ठ संख्या 67-74
- छाजेड़, एस. (2018). स्टडी ऑन एजुकेशनल एस्पिरेशन ऑफ इंस्टीट्यूशनल चिल्डरन् ऑफ इंदौर, इंटरनेशनल जरनल ऑफ साइकोलॉजी, वॉल्यूम 7, नं. 1, मार्च 2016, पृष्ठ संख्या 14-21
- नागर, डी. आर. (2017). हरियाणा के निराश्रित गृहों में निवासित एवं सामान्य बालकों की विलग-भावना का उनके व्यक्तित्व पर प्रभाव का अध्ययन, इंडियन साइकोलॉजिकल रिव्यू, वॉल्यूम 60, नं. 1, जुलाई 2017, पृष्ठ संख्या 14-21
- पारिक, उदय (2017). दिल्ली के बाल सुधार गृहों में रहने वाले अपराधी बालकों के आत्मप्रत्यय का अध्ययन, प्राची जरनल ऑफ साइको-कलचर डायमेनसनस, वॉल्यूम-21, नं. 2, अक्टूबर 2017, पृष्ठ संख्या 67-72
- पियरसन, डी. एम. (2018). ईगो एण्ड डिसक्रेपैन्सी बिटविनकोनसियस एण्ड मोटर स्किल, न्यू देहली पब्लिकेशन हाऊस, एडिसन 6, पृष्ठ संख्या 691-692
- मंगल, एस. के. (2008) विद्यार्थी, अधिगम एवं संज्ञान, टंडन पब्लिकेशनस्, बुक मार्केट, लुधियाना, पृष्ठ संख्या 170
- मेमन, एम. एल. (1957) शिक्षा एवं समाज, गार्गी पब्लिकेशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 42
- शर्मा, आर. आर. (2015). अलगाव मापनी, नेशनल साइकोलॉजिकल कोर्पोरेशन, आगरा, पृष्ठ संख्या 1-2
- शर्मा, वी. पी. और गुप्ता, ए. (2015). शैक्षिक आकांक्षा मापनी, नेशनल साइकोलॉजिकल कोर्पोरेशन, आगरा, पृष्ठ संख्या 1-2
- सिंह, ए. के. (2016). उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, मोतीलाल बनारसीदास पब्लिकेशन, दिल्ली, पृष्ठ संख्या 693 और 722
- सिंह, एस. (2016). माध्यमिक स्तरीय विद्यार्थियों के शैक्षिक आकांक्षा स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि के सम्बन्ध में अध्ययन, जरनल ऑफ एजुकेशनल एण्ड साइकोलॉजिकल रिसर्च, वॉल्यूम 51, नं.-2, अक्टूबर 2016, पृष्ठ संख्या 42-47
- स्पिट्ज, एन. (2017). ए स्टडी ऑन चिल्डरन् लिविंग इन नर्सरी एण्ड फोन्डलिंग होम इन रिलेशन टू देयर अलीनेशन, जरनल ऑफ कोम्युनिटी गाइडैन्स एण्ड रिसर्च, वॉल्यूम 33, नं. 1, मार्च 2017, पृष्ठ संख्या 47-53
- हंस व अन्य (2018) माता-पिता के दृष्टिकोण, सुरक्षा की भावना व परिवार की सामाजिक आर्थिक स्थिति का शैक्षिक आकांक्षा पर प्रभाव संबंधी अध्ययन, जरनल ऑफ सोशल रिलेशनस्, वॉल्यूम 22 (फर्स्ट क्वार्टर), नं. 4, मई 2017, पृष्ठ संख्या 42-48
- हरोल्ड, ई. मितरेल (1982). इनसाइक्लोपिडिया इन एजुकेशनल रिसर्च, 5वां एडिशन, वॉल्यूम 3
- हिल्डा लेविस (2016). बैकग्राउन्ड ऑफ हैल्पलैस चाइल्ड (फर्स्ट एडिसन), न्यूयॉर्क: डेल पब्लिशिंग कोर्पोरेशन, मार्च 2016, पृष्ठ संख्या 57,

वेबसाइट

- <https://link.springer.com>
- www.hfgf.orghttps://onlinelibrary.wiley.com/full/berj
- Psychology.wikia.com
- www.livemint.com